प्रातः क्लास 28/9/68 ओमशान्ति पिताश्री शिवबाबा याद है?
ओमशान्ति। बाप घड़ी2 बच्चों को अटेन्शन खैंचवाते हैं कि बाप की याद में बैठे हो। बुद्धि कोई और तरफ तो नहीं भागती है। बाप को बुलाते ही हैं इसलिए कि बाबा आकर हमें पावन बनाओ। पावन तो जरूर बनना है ना। और नॉलेज तो तुम किसको भी समझा सकते हो यह सृष्टि का चक्र कैसे फिरता है, किसको भी तुम समझाओ तो झट समझ जावेंगे। भल पवित्र न होगा तो भी नॉलेज तो पढ़ ही जावेंगे। कोई बड़ी बात नहीं। 84 का चक्र है। हरेक युग की इतनी आयु है। इतने जन्म होते हैं। कितना सहज है। इनका कनेक्शन याद से नहीं है। यह तो है पढ़ाई। शास्त्रों में तो लाखों वर्ष का गपोड़ा लगा दिया है। उनसे निकालने लिए समझाया जाता है। वह है ब्लाइन्ड फेथ। बाप तो यर्थाथ बात समझाते हैं। बाकी है सतोप्रधान बनने की बात। वह होगी याद से। अगर याद न करेंगे तो बहुत छोटा पद पा लेंगे। इतना ऊँच पद पा न सकेंगे। इसलिए कहा जाता है अटेन्शन। बुद्धि का योग बाप के साथ है? इनको ही प्राचीन राजयोग कहा जाता है। टीचर के साथ योग तो हरेक का होगा ना। मूल बात है ही याद की। याद की यात्रा से ही सतोप्रधान बनना है और सतोप्रधान बन कर स्वर्ग में जाना है। बाकी पढ़ाई तो बिल्कुल ही सहज है। कोई बच्चा भी समझ सकते हैं। बाकी माया की युद्ध इस याद में ही चलती है। तुम बाप को याद करते हो, माया फिर अपने तरफ खैंच याद भुला देती है। ऐसे कोई नहीं कहेंगे मेरे में तो शिवबाबा बैठा है। मैं शिव हूँ। नहीं। मैं आत्मा हूँ। शिवबाबा को याद करना है। ऐसे नहीं मेरे अन्दर शिव की प्रवेशता है। ऐसे हो नहीं सकता। बाप कहते हैं मैं कोई में जाता ही नहीं हूँ। हम तो इस रथ पर सवार होकर ही तुम बच्चों को समझाते हैं। हाँ कोई डल बुद्धि बच्चे हैं, और कोई अच्छा जिज्ञासु आ जाता है तो उनकी सर्विस अर्थ हम प्रवेश कर दृष्टि दे सकता हूँ। सदैव नहीं बैठ सकता हूँ। यहाँ भी आता हूँ टेम्पररी। इस समय तो वह कितना भी रूप धारण कर सकते हैं। बहूरूपी है ना। बहुरूप धारण कर किसका भी कल्याण कर सकते हैं। बाकी ऐसे कोई नहीं कहेंगे मेरे में शिवबाबा है। मुझे शिवबाबा यह कहते हैं। नहीं। शिवबाबा तो बच्चों को ही समझाते हैं। मूल बात है ही पावन बनने की। जो फिर पावन दुनिया में जाये। 84 का चक्र तो किसको सहज समझा सकते हैं। चित्र सामने लगे हुए हैं। बाप बिगर तो इतना ज्ञान कोई दे नहीं सकता। आत्मा को नालेज मिलती है। उनको ही ज्ञान का तीसरा नेत्र कहा जाता है। आत्मा को सुख दुख होता है। उनकी यह(शरीर) वस्तु है ना। तो आत्मा कहती है यह मेरे शरीर को दुख क्यों देते हो। कहने वाली, समझने वाली आत्मा है। आत्मा ही देवता बनती है। कोई बैरीस्टर कोई व्यापारी आत्मा ही बनती है। तो अब आत्माओं से बाप बात करते हैं। अपनी पहचान देते हैं। तुम जब देवी देवताएँ थे तो थे मनुष्य; परन्तु पवित्र आत्मा थी। अभी तुम देवता नहीं हो; क्योंकि अपवित्र हो। तो अब फिर देवी–देवता बनने लिए पवित्र बनना है। इसके लिए बाप को याद करना है। अक्सर करके यही कहते हैं बाबा मेरे से यह भूल हुई जो हम देहाअभिमान में आ गया। बाप बैठ बच्चों को समझाते हैं। पावन जरूर बनना है। कोई विकर्म न करो। तुमको सर्वगुण सम्पन्न यहाँ बनना है। पावन बन फिर मुक्तिधाम चले जावेंगे। और कोई प्रश्न पूछने करने की बात ही नहीं। तुम अपनी बात करो। दूसरी आत्माओं का चिन्तन नहीं करो। कहते हैं लड़ाई में दो करोड़ मरे इतनी आत्माएँ कहाँ गई। अरे वह कहाँ भी गई इसमें तुम्हारा क्या जाता है। तुम टाइम वेस्ट क्यों करते हो। और कोई भी बात की दरकार ही नहीं। तुम्हारा काम है पावन बनकर पावन दुनिया का मालिक बनना। और बातों में जाने से मुँझ पड़ेंगे। कोई को पूरा उत्तर न मिलता है तो मुँझ पढ़ते हैं। बाप कहते हैं मनमनाभव। देह सहित देह के सभी सम्बन्ध छोड़ माम एकम् याद करो। मेरे पास ही तुमको आना है। मनुष्य मरते हैं उनको श्मशान में ले जाते हैं तो वहाँ जाकर मुँह फेर देते हैं। फिर पांव इस तरफ मुँह उस तरफ कर देते हैं। तुम्हारा भी घर ऊपर में है ना। ऊपर में कोई पतित जा नहीं सकते। पावन बनने लिए बुद्धि का योग बाप के साथ लगाना है। बाप के पास मुक्तिधाम में जाना है। पतित हैं इसलिए ही बुलाते हैं कि हम पतितों

आकर पावन बनाओ। लिबरेट करो। तो बाप कहते हैं अभी पवित्र बनो। बाप जिस भाषा में समझाते हैं उसमें कल्प2 समझावेंगे। जो इनकी भाषा होगी उसमें ही समझावेंगे ना। आजकल हिन्दी बहुत चलती है। ऐसे नहीं कि भाषा बदल सकती है। नहीं। संस्कृत भाषा आदि कोई देवताओं की तो है नहीं। हिन्दूधर्म की भाषा संस्कृत नहीं है। हिन्दी ही हिन्दी चाहिए। बहुत भाषाएँ तो हैं नहीं। फिर संस्कृत को क्यों उठाते हैं। तो बाप समझाते हैं यहाँ जब बैठते हो तो बाप की याद में ही बैठना है। और कोई बातों में तुम जाओ ही नहीं। इतने मच्छर निकलते हैं कहाँ जाते हैं, आत्माएँ कहा जाती है। भूकम्प में ढेर के ढेर मनुष्य फट से मर जाते हैं, कहाँ जाते हैं। इनमें तुम्हारा क्या जाता। तुमको बाप ने श्रीमत दी है कि अपनी उन्नति के लिए यह पुरुषार्थ करो। औरों की चिन्तन में मत जाओ। ऐसे तो अनेक बातों की चिन्तन हो जावेगी। तुम मुझे याद करो तो पाप कटें। जिसके लिए ही बुलाया है। उस युक्ति में तो चलो। तुमको बाप से वरसा लेना है। और बातों में नहीं जाना है। इसलिए बाबा घड़ी2 कहते हैं अटेन्शन। कहाँ भी बुद्धि नहीं जाती। भगवान की श्रीमत मानना चाहिए ना। और कोई बात में फायदा नहीं। मुख्य बात है पावन बनने की। यह पक्का याद करो बाबा हमारा बाबा भी है, टीचर भी है, सद्गुरु भी है। यह जरूर याद दिल में रखना है। बाप बाप भी है, हमको पढ़ाते भी हैं। योग सिखलाते हैं। टीचर पढ़ाते हैं तो बुद्धि का योग टीचर में भी जाता है ना। पढ़ाई में जाता है। यह बाप भी कहते हैं तुम बाप के तो बन ही गये हो, बच्चे तो हो ही तब तो यहाँ बैठे हो। टीचर से पढ़ रहे हो। कहाँ भी रहते हो बाप के तो हो ही फिर पढ़ाई में अटेन्शन देना है। शिवबाबा को याद करेंगे तो विकर्म विनाश होंगे। और तुम सतोप्रधान बन जावेंगे। यह नालेज और कोई दे न सके। मनुष्य तो घोर–अंधियारे में है ना। ज्ञान में देखो कितनी ताकत है। ताकत कहाँ से मिलती है? बाप से इतनी ताकत मिलती है। जिससे तुम पावन बनते हो। फिर पढ़ाई भी सहज है। उस पढ़ाई में तो बहुत मास लग जाते हैं। यहाँ तो सात रोज़ का कोर्स है। उसमें भी तुम सभी कुछ समझ जावेंगे। फिर उसमें है बुद्धि पर। कोई जास्ती टाइम लगाते हैं कोई कम। कोई तो दो/तीन दिन में ही बड़े अच्छे समझ जाते हैं। मूल बात है बाप को याद करना, पवित्र बनना। वही मुश्किलात होती है। बाकी पढ़ाई तो मोस्ट सिम्पुल है। स्वदर्शनचक्रधारी बनना है। एक रोज के कोर्स में भी सभी समझ सकते हैं। हम आत्मा हैं, बेहद के बाप की सन्तान हैं तो जरूर हम विश्व के मालिक ठहरे। यह बुद्धि में आता है ना। यह देवता बनना है तो दैवीगुण धारण करनी है। जिसकी बुद्धि में आ गया वह फट से सभी आदतें छोड़ देंगे। तुम कहो न कहो आपे ही छोड़ देंगे। उल्टा–सुल्टा खान–पान, शराब आदि आपे ही छोड़ देंगे। कहते हैं वाह हमको यह बनना है। 21 जन्मों के लिए राज्य मिलता है। क्यों नहीं पवित्र बनेंगे। लग लगे माफिक लग जाना चाहिए। मुख्य बात है यह याद की। बाकी 84 के चक्र की नालेज तो एक सेकण्ड में मिल जाती है। देखने से ही समझ जाते हैं नया झाड़ जरूर छोटा होगा। अभी तो कितना बड़ा झाड़ है। तमोप्रधान हो गया है। कल फिर नया छोटा झाड़ होगा। तुम जानते हो यह ज्ञान कब कहाँ से भी मिल नहीं सकता है। यह पढ़ाई है। पहले2 शिक्षा यह मिलती है कि बाप को याद करो। बाप पढ़ाते हैं यह निश्चय करो। भगवानुवाचः मैं तुमको राजयोग सिखाता हूँ। और कोई मनुष्य ऐसे कह न सके। टीचर पढ़ाते हैं तो जरूर टीचर को याद करेंगे ना। बेहद का बाप भी है बाप हमको स्वर्ग का मालिक बनाते हैं; परन्तु आत्मा पवित्र कैसे बनेगी यह कोई बता न सके। भल अपन को भगवान कहे या कुछ भी कहे; परन्तु पावन कैसे बने। आजकल भगवान तो बहुत ही हो गये हैं। तो मनुष्य मुँझ पड़े हैं। कहते हैं अनेक धर्म निकलते रहते हैं। क्या पता कौन सा धर्म राइट है। भल तुम्हारी प्रदर्शनी अथवा म्युजियम का उद्घाटन आकर करते हैं; परन्तु समझते कुछ भी नहीं हैं। वास्तव में उद्घाटन तो हो ही गया है। पहले फाउंडेशन पड़ता है फिर जब मकान बनकर तैयार होता है तब उद्घाटन होता है। फाउन्डेशन लगाने लिये ही बुलाया जाता है। तो यह भी बाप ने स्थापना कर दिया है। बाकी नई दुनिया

का उद्घाटन आपे ही हो ही जावेगा। उसमें किसकी उदघाटन करने की दरकार ही नहीं। उद्घाटन तो ऑटोमेटिकली हो ही जाती है। यहाँ पढ़कर फिर अपनी नई दुनिया सतयुग में चले जावेंगे। तुम समझते हो अभी हम स्थापन कर रहे हैं। जिसके लिए ही मेहनत करनी पड़ती है। विनाश होगा फिर यह दुनिया ही बदल जावेगा। फिर तुम नई दुनिया में राज्य करने आवेंगे। सतयुग की स्थापना तो बाप ने की है। फिर तुम आवेंगे तो स्वर्ग की राजधानी मिल जावेगा। बाकी ओपनिंग शिरोमणी कौन करेंगे? बाप तो स्वर्ग में आते ही नहीं हैं। आगे चल देखना है स्वर्ग में क्या होता है। पिछाड़ी में क्या होता है। आगे चलकर समझेंगे। टाइम तो पड़ा है। तुम बच्चे जानते हो पवित्रता बिगर विद् ऑनर तो हम स्वर्ग में घुस भी न सकेंगे। इतना पद पा नहीं सकेंगे। इसलिए बाप कहते हैं खूब पुरुषार्थ करो। धंधा आदि भी भल करो; परन्तु जास्ती पैसा क्या करेंगे। खा तो सकेंगे नहीं। तुम्हारे पुत्र, पोत्रे आदि भी नहीं खावेंगे। सभी मिट्टी में मिल जावेगा। इसलिए 8 वर्ष का स्टॉक रखो युक्ति से। बाकी तो सभी वहाँ ट्रान्सफर कर दो। सभी तो ट्रान्सफर नहीं कर सकते। गरीब जल्दी ट्रान्सफर कर देते हैं। भक्तिमार्ग में भी ट्रान्सफर करते हैं दूसरे जन्म लिये; परन्तु वह है इनडायरेक्ट। यह है डायरेक्ट। पतितों का हिसाब–किताब पतित मनुष्य से ही होता है। अभी तो बाप आये हैं, तुम्हारा तो पतितों से लेन–देन है नहीं। तुम हो ब्राह्मण। ब्राह्मणों को ही तुमको मदद करनी है। बहुत अच्छा ब्राह्मण है उनको भल मदद करो। जो खुद सर्विस करते हैं उनको तो मदद की दरकार नहीं। यहाँ गरीब साहुकार आदि सब आ जाते हैं। बाकी मलटीमिलीयन तो मुश्किल ही आवेंगे। बाप कहते हैं मैं हूँ गरीबनिवाज़। भारत ही गरीब खण्ड है ना। बाप कहते हैं मैं आता भी भारत में हूँ। उसमें भी यह आबू सबसे बड़ा तीर्थ है। जहाँ बाप आकर सारे विश्व की सद्गति करते हैं। मुक्ति–जीवनमुक्ति का वरसा देते हैं, यह किसकी भी बुद्धि में नहीं होगा। संगम पर ही बाप आकर सर्व की सद्गति करते हैं। भक्ति से दुर्गति होती है। इसलिए बाप आकर सद्गति का फल देते हैं। भक्ति का फल देते हैं अर्थात् सद्गति करते हैं। यह है नर्क। तुम जानते हो नर्क से फिर स्वर्ग कैसे होता है। अभी तुम्हारी बुद्धि में सारी नॉलेज है। बाप युक्ति ऐसी बताते हैं पावन बनने की जो सभी का कल्याण करते हैं। सतयुग में अकल्याण की बात, रोना–पीटना आदि कुछ भी नहीं होता। अभी जो बाप की महिमा है ज्ञान का सागर, सुख का सागर.....है। अभी तुम्हारी भी यह महिमा है जो बाप की है। तुम भी आनन्द के सागर, प्रेम के सागर, सुख के स(ा)गर बनते हो। बहुतों को सुख देते हो। फिर जब तुम्हारी आत्मा संस्कार ले नई दुनिया में जावेगी तो वहाँ फिर तुम्हारी महिमा बदल जावेगी। फिर तुमको कहेंगे सर्वगुण सम्पन्न..... अभी तुम हेल में बैठे हो। इनको कहा जाता है कांटों का जंगल। बाप को ही बागवान खेवइया कहा जाता है। गाते भी हैं हमारी नइया पार करो; क्योंकि दुखी हैं तो आत्मा पुकारती है। महिमा भल गाते हैं; परन्तु समझते कुछ भी नहीं हैं। जो आया सो कह देते। जैसे कहते हैं अचतम् अर्थात् मैं चिन्तन करता हूँ, केशवम, कृष्ण को भी याद करते हैं। श्री राम श्री नारायण कृष्ण श्री वासुदेवा..... कितना अग्रम–बग्रम बैठ बनाया है। अर्थ कुछ भी नहीं। जो आया वह उपमा कर देते बेसमझ से। ऊँच ते ऊँच भगवान की निन्दा करते रहते तो निन्दक निधणके बन जाते हैं। अभी तुम घर में भक्ति न करो तो कहेंगे नास्तिक हैं। तुम कहेंगे हम तो आस्तिक हैं। सर्व का सद्गति दाता जो बाप है उनको हम जान गये हैं। बाप ने खुद ही परिचय दिया है। तुम भक्ति नहीं करते हो तो कितना तुमको तंग करते हैं। वह है मैजोरिटी। तुम्हारी है मैनारिटी। तुम्हारी जब मैजोरिटी हो जावेगी तब उन्हों को भी कशिश होगी। बुद्धि का ताला खुलता जावेगा। कोई देखते हैं बाप के पास प्रापर्टी है, हमारा भी हिस्सा लगता है, परन्तु वह कहते हैं देंगे तब जब तुम यहाँ का संग छोड़ेंगे भक्ति आदि करेंगे। अच्छा। प्रापर्टी होगी तो काम में आवेगी। पापात्माओं में क्यों लगाई जाये। फिर युक्ति से सेन्टर्स खोलते जावेंगे। जहाँ बहुतों का कल्याण करने बाप का परिचय देंगे। बहुत दुखी हैं। भल साहुकार हैं; परन्तु हाथ में कुछ भी आना न है। जहाँ है वहाँ ही खत्म हो जावेगा। अपनी जन्मभूमि सभी को अच्छी

लगती है, मान भी देते हैं। अपनी भूमि का रिगार्ड रखते हैं। बाप कहते हैं सबसे ऊँची भूमि यह भारत की है। जहाँ मैं आता हूँ। सबसे बड़ा तीर्थ यह है। तुम बच्चे भी सारे विश्व की सद्गति करते हो श्रीमत पर। तो यह सबसे बड़ा तीर्थ यह है। तुम बच्चे भी सारे विश्व की सद्गति करते हो श्रीमत पर। तो यह सबसे बड़ा तीर्थ हुआ ना। गीता से फिर क्या हुआ यह भी कोई नहीं जानते। समझते हैं कृष्ण ने गीता सुनाकर सद्गति की; परन्तु वह बात है नहीं। अभी तुमको यह सभी बताना है। आबू है सबसे बड़ा तीर्थ। दिलवाला मंदिर भी यहाँ ही है। आदिदेव को महावीर समझ बैठे हैं; परन्तु उन्हों को ऐसा बनाया किसने। शिवबाबा ने ही बनाया ना। उनको जानते ही नहीं। अभी तुम समझा सकते हो दिलवाला मंदिर किसका यादगार है। बोलो आबू में चलो तो हम तुमको हूबहू यादगार दिखावें जो हेविन स्थापन करके गये थे उनका यह यादगार है। स्वर्ग ऊपर में है और नीचे तपस्या कर रहे हैं। उनको ही राजयोग कहा जाता है। यह तो बिल्कुल एक्युरेट यादगार बना हुआ है। दिखावेंगे तो मॉडल ना। बड़ा तो नहीं बन सकता। अभी तुम जानते हो यह शिक्षा कहाँ से लेते हैं। बाप से। बाप कहाँ मधुबन में। मधुबन इनको कहा जाता है। भक्तिमार्ग में मधुबन की यात्रा करते रहते हैं। सबसे ऊँच यात्रा यह है। तुमको पूरी समझ है। तुम समझते हो यह तो एक्युरेट यादगार है। भारत का प्राचीन राजयोग किसने सिखाया था यह तुम बता सकते हो। आबू की महिमा तुम बहुत बढ़ा सकते हो। यहाँ तो तुम्हारा बहुत अच्छा म्युजियम बनना चाहिए। कोशिश हो रही है। तुम बच्चे जानते हो हम स्थापन कर रहे हैं। इनका यादगार तो भक्तिमार्ग में बना हुआ है वह खड़ा है। हम ही पूज्य थे सो फिर पुजारी बने हैं। फिर अब पूज्य बनते हैं। हम सो पूज्य सूर्यवंशी–चन्द्रवंशी थे। फिर वैश्यवंशी–शूद्रवंशी बने। फिर अब ब्राह्मण बने हैं। विराटरूप दिखाते भी हैं। सिर्फ उसमें शिवबाबा को नहीं दिखाते हैं। यह सभी बातें भी बुद्धि में रहे तो बहुत ही खुश होंगे। भगवान हमको राजयोग सिखाये विश्व की बादशाही देते हैं। शिवजयन्ति भी है। शिवरात्रि का भी अर्थ नहीं समझते हैं। शिवजयन्ति तो कह न सके; क्योंकि बाप तो मनुष्य शरीर लेते ही नहीं है। बाप कहते हैं मैं आता हूँ कल्प2 के संगमयुग, जबकि भक्ति सो घोर अंधियारा हो जाता है। मेरी बहुत ग्लानि करते हैं। अभी तुम कहेंगे बरोबर आसुरी मत पर हम अपने मोस्ट विलवेड बाप को कच्छअवतार–मच्छअवतार, बराह अवतार कह देते थे। अभी तो कुत्ते बिल्ले सबमें ठोक दिया है। इनको कहा जाता है 100% इनसॉलवेन्ट कौड़ी तुल्य। फिर 100% सॉलवेन्ट हीरे तुल्य बनते हैं। हीरे जैसा अमूल्य जीवन अभी तुम प्राप्त कर रहे हो। बाप प्राप्ति करा रहे हैं। बाप आते ही हैं एक बार। कल्प कल्प कल्प के संगमयुग पर ही आते हैं। अक्षरों में कितनी भूल कर दी है। युगे–2 कहने से कितने अवतार बैठ दिखाई है। फिर बढ़ाते2 भित्तर–ठिक्कर में कह देते परमात्मा है। इसको कहा जाता है भक्तिमार्ग। बाप आकर ज्ञान देते हैं। तो सभी की चढ़ती कला हो जाती है। बाप आकर सभी की सद्गति करते हैं। बीच में कोई की सद्गति नहीं हो सकती। यह नॉलेज बहुत धारण कर नहीं सकते तो अच्छा अपन को आत्मा समझ बाप को याद करो तो तुम पावन बन पावन दुनिया में चले जावेंगे। भक्तिमार्ग में कृष्णपुरी में जाने लिए कितनी मेहनत करते हो। वर्त–नेम रखते हो। निर्जल रहते हो। कितनी तकलीफ में रहते हो। यहाँ तो तकलीफ की बात ही नहीं। यह है पढ़ाई। पढ़ाई से तुम कंसपुरी से कृष्णपुरी में जाते हो। बच्चे अभी जानते हैं हम इस राजयोग की पढ़ाई से नई दुनिया के मालिक बन रहे हैं। राजयोग सिवाय बाप के और कोई पढ़ा न सके। पढ़ाई से कब कोई राजा बनता नहीं है। सिर्फ बाप ही बनाते हैं। वह दान–पुण्य से अल्प काल का राज पाते हैं। यहाँ तो बाप राजयोग पढ़ाते हैं। जो और कोई सिखला न सके। सो भी तुम विश्व के मालिक बनते हो। अच्छा मीठे2 रूहानी बच्चों को रूहानी बाप व दादा का यादप्यार गुडमॉर्निंग। रूहानी बच्चों को रूहानी बाप का नमस्ते।

अपन को आत्मा समझो? बाप यानी बेहद का याद है?